17 जून 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

राग-द्वेष कम करने का सरलतम उपाय अपने सुख-दुख के कारण अपने में ही खोजना है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-२५

वर्ष : 30, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देश में विशाल धार्मिक शिविरों की धूम

मध्यप्रदेश-उत्तर प्रदेश के 51 स्थानों पर ग्रुप शिविर ह्न

1. श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन-देवनगर (भिण्ड) के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 4 जून, 07 तक मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, शिवपुरी, इटावा, मैनपुरी एवं फिरोजाबाद जिलों के 51 विभिन्न स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

इन सभी स्थानों पर मिलाकर लगभग 8,500 बालक-बालिकाओं तथा 4,000 मुमुक्षु भाई-बहनों ने शिविर का लाभ लिया। परीक्षा में 5,500 बालक-बालिकायें सम्मिलित हुये।

इस विशाल आयोजन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन एवं अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के कुल 128 विद्वानों ने शिक्षण कार्य किया।

शिविर बाल ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारजी की प्रेरणा से एवं पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बाल ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड ने विविध स्थानों पर भ्रमण कर ज्ञान वर्षा की।

आयोजन में सर्वश्री सुनीलजी शास्त्री भिण्ड, महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, राजीवजी भिण्ड, शुद्धात्मजी शास्त्री मौ, आशीषजी शास्त्री भिण्ड, विकासजी शास्त्री मौ, नितुलजी शास्त्री भिण्ड, सौरभजी शास्त्री मौ का सराहनीय सहयोग रहा। **ह्न सुरेशचन्द जैन, भिण्ड**

विदर्भ के 32 स्थानों पर ग्रुप शिविर ह्न

2. श्री कुन्दकुन्द दिग. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर एवं के.के.पी.पी.एस. उज्जैन के सहयोग से स्व. श्रीमती मुलियाबाई छोटेलालजी मोदी की स्मृति में मोदी परिवार नागपुर द्वारा आयोजित दसवें बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन विदर्भ के 32 स्थानों पर दिनांक 3 से 10 जून,07 तक किया गया।

शिविर का उद्घाटन नागपुर में शनिवार 2 जून, 2007 को श्री प्रकाश मारवडकर की अध्यक्षता; श्री कृष्णा खोपडे (नगर सेवक) व श्री चन्दूजी मेहर (पूर्व नगर सेवक) के मुख्य आतिथ्य तथा पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन श्री प्रियदर्शन हुकुमचन्द गहाणफरी एवं झण्डारोहण श्री अशोककुमार मोदी परिवार द्वारा किया गया। सभा का संचालन पण्डित जितेन्द्रजी राठी, जयपुर ने किया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं मंगलायतन परिवार अलीगढ के लगभग 50 विद्वानों की टीम ने विभिन्न स्थानों पर करीब 1500 छात्र-छात्राओं को जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराया।

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 10 जून को नागपुर में नवनिर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन के कानजीस्वामी सभागार में श्री शिखरचन्दजी मोदी की अध्यक्षता; श्री बिज्जु पांडे, श्रीमती आभा पाण्डे, श्री विवेक सोईतकर एवं डॉ. संतोष मोदी के मुख्यातिथ्य तथा पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभी विद्वत्गणों, शिविर प्रभारियों, प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों एवं चित्रकला, शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता के श्रेष्ठ प्रतियोगियों को श्री नरेशजी सिंघई के करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

समारोह का सफल संचालन शिविर संयोजक पण्डित प्रवेश शास्त्री करेली एवं पण्डित स्वप्निल शास्त्री नागपुर ने किया। **ह्न अशोक जैन**

बुन्देलखण्ड के 19 नगरों में सामूहिक शिविर ह्न

3. **द्रोणगिरि (म.प्र.) :** श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से दिनांक 19 से 27 मई, 2007 तक बुन्देलखण्ड के 19 विभिन्न नगरों में एक साथ विशाल धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

(शेष, पृष्ठ 5 पर ...)

सम्पादकीय -

समाधि और सल्लेखना

६

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सल्लेखना बाह्य स्वरूप ह्न जब उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा अथवा असाध्य रोग आदि कोई ऐसी अनिवार्य परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसके कारण धर्म की साधना संभव न रहे तो आत्मा के आश्रय से कषायों को कृश करते हुए अनशनादि तपों द्वारा काय को भी कृश करके धर्म रक्षार्थ मरण को वरण करने का नाम ही सल्लेखना है। इसे ही मृत्यु महोत्सव भी कहते हैं।

प्रश्न :ह्न मरण को महोत्सव कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर :ह्न जो मरण आत्मज्ञानपूर्वक हो; जो मरण, जन्म-मरण के अभाव के लिए हो; उसे महोत्सव कहने में कोई आपत्ति नहीं है। ज्ञानी जीवों के संसार में अनन्त भव तो होते ही नहीं हैं, थोड़े-बहुत भव ही शेष होते हैं, उनमें भी प्रत्येक मरण उन्हें मुक्ति के निकट ला रहा है; इस कारण उस मरण को महोत्सव कहना अनुचित नहीं है।

धर्म आराधक उपर्युक्त परिस्थिति में प्रीतिपूर्वक प्रसन्न चित्त से बाह्य में शरीरादि संयोगों को एवं अन्तरंग में राग-द्वेष आदि कषायभावों को क्रमशः कम करते हुए परिणामों में शुद्धि की वृद्धि के साथ शरीर का परित्याग करता है।

समाधि की व्याख्या करते हुए अनेक शास्त्रों में एक यही कहा गया है कि ह्न **समरसी भावः समाधिः** समरसी भावों का नाम समाधि है। इसमें त्रिगुप्ति की प्रधानता होने से समस्त विकल्पों का नाश होना मुख्य है।

सल्लेखना में जहाँ काय व कषाय कृश करना मुख्य है, वहीं समाधि में निजशुद्धात्म स्वरूप का ध्यान प्रमुख है। स्थूलरूप से तीनों एक होते हुए भी साधन-साध्य की दृष्टि से सन्यास समाधि का साधन है और समाधि सल्लेखना का साधन है; क्योंकि सन्यास बिना समाधि संभव नहीं और समाधि बिना सल्लेखना-कषायों का कृश होना संभव नहीं होता।

सल्लेखना के आगम में कई प्रकार से भेद किए हैं; जिनका संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है ह्न

नित्यमरण सल्लेखना :ह्न अंजुलि के जल बिन्दुओं के समान प्रतिसमय होनेवाले आयुकर्म के क्षय से जो जीवन निरन्तर मरण की ओर अग्रसर है उसे नित्यमरण कहते हैं। तथा साथ द्रव्य (बाह्य) सल्लेखनापूर्वक विकारी परिणाम विहीन शुद्ध परिणमन नित्यमरण सल्लेखना है।

तद्भवमरण सल्लेखना :ह्न भुज्यमान (वर्तमान) आयु के अन्त में शरीर और आहार आदि के प्रति निर्ममत्व होकर साम्यभाव से शरीर त्यागना तद्भवमरण सल्लेखना है।

काय सल्लेखना :ह्न काय से ममत्व कम करते हुए काय को कृश करना; उसे सहनशील बनाना काय सल्लेखना है। एतदर्थ कभी उपवास, कभी एकाशन, कभी नीरस आहार कभी अल्पाहार (उनोदर)। ह्न इसतरह क्रम-क्रम से शक्तिप्रमाण आहार को कम करते हुए क्रमशः दूध, छाछ गर्मपानी से शेष जीवन का निर्वाह करते मरण के निकट आने पर पानी का भी त्याग करके देह का त्याग करना काय सल्लेखना है।

भक्त प्रत्याख्यान सल्लेखना :ह्न इसमें भी उक्त प्रकार से ही भोजन का त्याग होता है। इसका उत्कृष्ट काल १२ वर्ष व जघन्यकाल अन्तर्मुहूर्त है।

कषाय सल्लेखना :ह्न तत्त्वज्ञान के बल से कषायें कृश करना।

आगम में मरण या समाधि मरण के उल्लेख अनेक अपेक्षाओं से हुए हैं ह्न उनमें निम्नांकित पाँच प्रकार के मरण की भी एक अपेक्षा है।

१. पण्डित-पण्डित मरण :ह्न केवली भगवान के देह विसर्जन को पण्डित-पण्डित मरण कहते हैं। इस मरण के बाद जीव पुनः जन्म धारण नहीं करता।

२. पण्डित मरण :ह्न यह मरण छठवें गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के होता है। एकबार ऐसा मरण होने पर दो-तीन भव में ही मुक्ति हो जाती है।

३. बाल पण्डित मरण ह्न यह मरण देशसंयमी के होता है। इस मरण के होने पर सोलहवें स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।

४. बाल मरण :ह्न यह मरण चतुर्थगुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि के होता है। इस मरण से प्रायः स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

५. बाल-बाल मरण :ह्न यह मरण मिथ्यादृष्टि के होता है। यह मरण करने वाले अपनी-अपनी लेश्या व कषाय के अनुसार चारों गतियों के पात्र होते हैं। पाँचवें बाल-बाल मरण को छोड़कर उक्त चारों ही मरण समाधिपूर्वक ही होते हैं, परन्तु स्वरूप की स्थिरता और परिणामों की विशुद्धता अपनी-अपनी योग्यतानुसार होती है।

समाधिधारक यह विचार करता है कि ह्न ''जो दुःख मुझे अभी है, इससे भी अनंतगुणे दुःख मैंने इस जगत में अनन्तबार भोगे हैं, फिर भी आत्मा का कुछ भी नहीं बिगड़ा। अतः इस थोड़े से दुःख से क्या घबराना? यदि पीड़ा चिन्तन आर्तध्यान होगा तो फिर नये दुःख के बीज पड़ जायेंगे। अतः इस पीड़ा पर से अपना उपयोग हटाते हुए संकल्प करें कि ह्न ''मैं अपने उपयोग को पीड़ा से हटाता हूँ।'' इस संकल्प से पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा तो होगी ही, नवीन कर्मों का बंध भी नहीं होगा। जो असाता कर्म के उदय में दुःख आया है, उसे सहना तो पड़ेगा ही, यदि समतापूर्वक सह लेंगे और तत्त्वज्ञान के बल पर संक्लेश परिणामों से बचे रहेंगे तथा आत्मा की आराधना में लगे रहेंगे तो दुःख के कारणभूत सभी संचित कर्म क्षीण हो जायेंगे।

हम चाहे निर्भय रहें या भयभीत, रोगों का उपचार करें या न करें, जो प्रबलकर्म उदय में आयेंगे, वे तो फल देंगे ही। उपचार भी कर्म के मंदोदय में ही अपना असर दिखा सकेगा। जबतक असाता का तीव्र उदय रहता है, तबतक औषधि निमित्त रूप से भी कार्यकारी नहीं होती। अन्यथा बड़े-बड़े वैद्य डाक्टर, राजा-महाराजा तो कभी बीमार ही नहीं पड़ते;

क्योंकि उनके पास साधनों की क्या कमी? अतः स्पष्ट है कि होनहार के आगे किसी का वश नहीं चलता। ह्न ऐसा मानकर आये दुःख को समताभाव से सहते हुए सबके ज्ञाता–दृष्टा बनने का प्रयास करना ही योग्य है। ऐसा करने से ही मैं अपने मरण को समाधिमरण में परिणत कर सकता हूँ।

आचार्य कहते हैं कि ह्न यदि असह्य वेदना हो रही हो और उपयोग आत्मध्यान में न लगता हो, मरण समय हो तो ऐसा विचार करें कि ह्न ''कोई कितने ही प्रयत्न क्यों न करे, पर होनहार को कोई टाल नहीं सकता। जो सुख–दुःख, जीवन–मरण जिस समय होना है, वह तो होकर ही रहता है।

कार्तिकानुप्रेक्षा में स्पष्ट लिखा है कि ह्न ''साधारण मनुष्य तो क्या, असीम शक्ति सम्पन्न इन्द्र व अनन्त बल के धनी जिनेन्द्र भी स्व–समय में होनेवाली सुख–दुःख व जीवन–मरण पर्यायों को नहीं पलट सकते।''

ऐसे विचारों से सहज समता आती है और राग–द्वेष कम होकर मरण समाधिमरण में परिणत हो जाता है।

प्रश्न :ह्न गुरुदेव श्री कानजीस्वामी से किसी ने पूछा ह्न ''पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा तो अशरण भावना में शुद्धात्मा और पंचपरमेष्ठी ह्न दोनों को शरणभूत करते हैं। आप पण्डित जयचन्दजी को तो समयसार के टीकाकार के रूप में बहुत श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हो, फिर भी आप अकेले आत्मा को ही शरण क्यों कहते हैं? कथंञ्चित् भगवान का स्मरण भी शरण है ह्न ऐसा कहो न?

उत्तर :ह्न भाई, निश्चय से तो ज्ञानानन्दस्वरूप शुद्ध आत्मा ही शरणभूत है, अन्य अरहन्त आदि को तो निमित्त की अपेक्षा व्यवहार से शरण कहा है। अन्दर में जो भगवान ज्ञायक अतीन्द्रिय शान्ति का पिण्ड शुद्धात्मा है, उसमें एकाग्रता करना ही जीव को निश्चय से शरण है; जो अरहंतादि पंच–परमेष्ठी की भक्ति इत्यादि शुभभाव होते हैं, उनसे पुण्य बंध होता है, अतः उन्हें व्यवहार से शरण कहा है। और हाँ, वे पंचपरमेष्ठी भी जीव को यही उपदेश देते हैं कि तुम अपने ज्ञानानन्द स्वभावी शुद्धात्मा की शरण में जाओ। वही एक मात्र शरणभूत है। इसप्रकार वे पंचपरमेष्ठी स्वयं भी शुद्धात्मा की शरण में क्षण–क्षण में जाते हैं और भव्य जीवों को भी शुद्धात्मा की शरण में जाने का उपदेश देते हैं। इसी कारण निमित्त बनने की अपेक्षा से वे व्यवहार से शरण कहे जाते हैं।

पण्डित जयचन्दजी भी यहीं कहते हैं।

प्रवचनसार में आता है कि **'हे भव्य जीव ! तुम स्याद्वाद विद्या के बल से विशुद्ध ज्ञान की कला द्वारा इस एक सम्पूर्ण शाश्वत स्वतत्त्व को प्राप्त करके आज ही परमानन्द परिणामरूप परिणमो... उस चित्तस्वरूप आत्मा को आज ही अनुभव करो।'**

हे भाई ! राग से भिन्न निज भगवान आत्मा की अनुभूति का उद्यम अभी से कर ! मरण आएगा, तब वह उद्यम करूँगा ह्न ऐसा वायदा मत कर। यदि मूर्च्छित अवस्था में ही मरण हो गया तो सब वायदे धरे रह जायेंगे। अतः वायदा में कोई फायदा नहीं है।

समयसार की पाँचवी गाथा में कहा है कि 'जदि दाएज्ज पमाणं' अर्थात् उस एकत्व–विभक्त शुद्ध आत्मा को दर्शाऊँ तो प्रमाण करना; सुनकर मात्र हाँ–हाँ नहीं करना; उसे स्वानुभव प्रत्यक्ष करके, उसकी अनुभूति करके प्रमाण करना।

अहा! दिगम्बर सन्तों की सचोट भाषा और निष्कषाय करुणा तो देखो ! कहते हैं ह्न 'भगवान आत्मा आनन्द का सागर है, उसका अनुभव प्राप्त करने के लिए अभी से प्रयत्न करो।'

घर जले, तब यदि कुआँ खोदे तो पानी कब निकले और कब आग को बुझावे, पानी निकले तब तक तो घर जल कर राख हो जाएगा, घर को आग से बचाना हो तो पहले से ही पानी की व्यवस्था रखना चाहिए। इसीप्रकार मौत आए तब नहीं, अपितु पहले से ही अर्थात् **अभी से ही आत्मा की आराधना शुरू करने और आत्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयत्न कर ! जब से सुना हो, तभी से प्रयत्न प्रारम्भ कर दे।**

अहा! दिगम्बर सन्तों की वाणी पञ्चमकाल के अत्यन्त अप्रतिबुद्ध श्रोताओं से कहती है कि **भाई! आत्मानुभूति प्राप्त करने के लिए अभी से शुरूआत कर दे।** समयसार की ३८वीं गाथा की टीका में कहा है कि 'विरक्त गुरु से निरन्तर समझाये जाने पर दर्शन–ज्ञान–चारित्रस्वरूप परिणत होकर जो सम्यक् प्रकार से एक आत्माराम हुआ है, वह श्रोता/शिष्य कहता है कि ह्न 'कोई भी परद्रव्य, परमाणुमात्र भी मुझरूप भासित नहीं होता, जो मुझे भावकरूप तथा ज्ञेयरूप होकर फिर से मोह उत्पन्न करे, क्योंकि निजरस से ही मोह को मूल से उखाड़कर, फिर से अंकुरित न हो ह्न ऐसा नाश करके, महान ज्ञानप्रकाश मुझे प्रगट हुआ है।'

अहा ! पञ्चम काल का अप्रतिबुद्ध शिष्य–प्रतिबोध प्राप्त करके कहता है कि ह्न 'हमको प्रगट हुआ ज्ञानप्रकाश अप्रतिहत है, भले ही क्षायोपशमिक भावरूप है तो भी अप्रतिहत होने से '**जोड़नी क्षायिक**' है; इसलिए हमें पुनः मिथ्यात्व का अंकुर उत्पन्न होगा ही नहीं।'

अरे! मौत आने पर यह देह, कुटुम्ब का मेला, धन, मकान, गाड़ी, वाड़ी इत्यादि सब छूट जाएगा। कोई दुःख की बेला में सहायक नहीं होगा। देह की स्थिति पूरी होने के नगाड़े बज रहे हैं। मौत अचानक आ जाएगी, वह नोटिस देकर नहीं आएगी।

देह का संयोग अनित्य है और भगवान आत्मा ध्रुव नित्य तत्त्व है। आत्मा का कभी नाश नहीं होता, देह और आत्मा स्वभाव से तो भिन्न ही हैं; मात्र निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध के कारण पर्याय अपेक्षा से एकक्षेत्रावगाहरूप साथ रह रहे हैं। वस्तुतः तो वे दोनों अपने–अपने स्वक्षेत्र में ही रहते हैं। आकाश के एक क्षेत्र में जो दोनों साथ रह रहे हों, उनके पृथक् होने को मौत कहते हैं। **मृत्यु जरूर आनेवाली है, ऐसा बारम्बार याद करके अन्तरंग में स्वसन्मुखता का पुरुषार्थ कर ! जिससे 'अब हम अमर भये, न मरेंगे' ह्न ऐसी सावधानी में तू समाधिपूर्वक मरण कर सके।** (क्रमशः)

विश्व का प्रथम प्राकृत विश्वविद्यालय बनाने की तैयारियाँ

श्रवणबेलगोला : विश्व प्रसिद्ध श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में विश्व का प्रथम प्राकृत विश्वविद्यालय बनाने की तैयारियाँ जोर-शोर से जारी है। कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के सत्प्रयत्नों से विश्व के प्रथम 'बाहुबली प्राकृत विश्वविद्यालय' का प्रस्ताव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली को भेजा जा चुका है। श्रुतकेवली ऐजुकेशन ट्रस्ट ने इसके लिये भवन निर्माण का भी कार्य प्रारंभ कर दिया है।

प्रो. प्रेमसुमन जैन एवं श्री धर्णेन्द्र डी. जैन ने बताया कि इस विश्व विद्यालय में ९ विभाग होंगे, जिसमें ५० प्राध्यापकों की नियुक्ति की जावेगी। इन विभागों में प्राकृत, संस्कृत, पालि, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड आदि भाषाओं के साहित्य में शोध एवं प्रकाशन का कार्य होगा। जैन धर्म-दर्शन, कला, इतिहास, पुरातत्त्व, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि विषयों का शिक्षण भी विश्वविद्यालय में प्रस्तावित है।

शिवपुरी में शिक्षण शिविर

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ ८ माह की अल्पावधि में ही निर्मित श्री शांतिनाथ जिनालय में २८ मई से ४ जून, ०७ तक के.के.पी.पी.एस. उज्जैन एवं युवा फैडरेशन भिण्ड के सहयोग से प्रथम बार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रवचन एवं कक्षायें पण्डित अतुल शास्त्री ध्रुवधाम एवं पण्डित अभिषेक जैन मंगलायतन द्वारा ली गई। शिविर के मध्य पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के तीन दिनों में पाँच प्रवचनों का लाभ मिला।

तमिलनाडू में धर्म प्रभावना

1. **चेन्नई :** यहाँ १२ मई से १४ मई तक आचार्य कुन्दकुन्द संस्कृति केन्द्र पौन्नूर हिल तथा चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर कमेटी चेन्नई के तत्त्वावधान में धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में जम्बूकुमारजी शास्त्री, जयराजनजी शास्त्री, एलंगोवनजी शास्त्री एवं अशोकजी शास्त्री ने अध्यापन कार्य कराया। शिविर के आयोजन में मन्दिर के समस्त ट्रस्टीगण एवं तमिलनाडू के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री श्रीपाल (सेवानिवृत्त आई.पी.एस.) ने सक्रिय भूमिका निभाई।

2. **तिरुमलै :** यहाँ श्री क्षेत्र अरहंतगिरि जैन मठ एवं आ. कुन्दकुन्द संस्कृति केन्द्र पौन्नूर हिल के तत्त्वावधान में तृतीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण-शिविर १६ से २० मई,०७ तक सम्पन्न हुआ।

श्री क्षेत्र के भट्टारक स्वस्ति श्री धवलकीर्ति स्वामीजी, मेलचित्तामूर जिनकांची मठ के स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी ने ध्वजारोहण किया।

उद्घाटन समारोह में इनके साथ-साथ श्वेताम्बर संत श्री कान्तिमुनि की उपस्थिति विशेष रही। शिविर में पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, पण्डित उमापति शास्त्री, पण्डित जयराजन शास्त्री, पण्डित नाभिराजन शास्त्री एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी राजेन्द्रन ने शिक्षण कार्य कराया। ह्न **बी.उमापति**

ऐतिहासिक हुआ संस्कार शिक्षण शिविर

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान विद्यापीठ के तत्त्वावधान में दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 20 मई से 27 मई, 2007 तक आयोजित 8 दिवसीय आध्यात्मिक बाल युवा संस्कार शिक्षण शिविर विभिन्न उपलब्धियों सहित ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न हुआ।

छिन्दवाड़ा की पावन धरा पर प्रथम बार जैन सिद्धान्तों के बीजारोपण के उद्देश्य से आवासीय आध्यात्मिक बाल युवा शिक्षण शिविर में पूरे देश से 222 नन्हे-मुन्हे शिविरार्थी सम्मिलित हुये। शिविर में मुम्बई, कोलकाता, अहमदाबाद, कोटा, शिरपुर, औरंगाबाद, रामटेक, ललितपुर के साथ प्रदेश के भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, देवास, खण्डवा, जबलपुर, विदिशा, सागर, रायसेन, सिवनी, कटनी सहित छिन्दवाड़ा जिले के सभी विधानसभा क्षेत्र के बालक-बालिकाओं ने उत्साह एवं उमंग के साथ हिस्सा लिया।

शिविर में प्रतिदिन प्रातः व्यायाम, योग, सामूहिक पूजन, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की कक्षायें, साहित्यिक गतिविधियाँ, जिनेन्द्र भक्ति, संस्कार रैली, मंगल प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। प्रतिदिन रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

शिविर का निर्देशन डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी ने किया तथा शिक्षण कक्षायें पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा ली गयीं।

समापन के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनमंदिर में सामूहिक पूजन के पश्चात् बाल ब्र. संवेगी श्री धवलजी के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। समापन सभा में शिविर के निर्देशक, प्रशिक्षक, कुन्दकुन्द विद्यापीठ के अध्यक्ष के अतिरिक्त मुमुक्षु मण्डल के संरक्षक एडवोकेट प्रबोधचंद जैन, फैडरेशन के अध्यक्ष तरूण पाटनी, शिविर के विशिष्ट सहयोगी मोतीलाल जैन, प्रकाश जैन, विजय कौशल, शांतिकुमार पाटनी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

इस अवसर पर शिविरार्थियों ने संकल्प किया कि कभी भी रात्रि भोजन नहीं करेंगे, पेप्सी आदि शीतल पेय नहीं पीयेंगे, पटाखे नहीं जलाएंगे, प्रतिदिन मंदिर जायेंगे, आलू-प्याज आदि जमीकंद नहीं खायेंगे, जीवदया का पालन करेंगे, चमड़े की वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे।

शिक्षण शिविर को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने में सुबोध कुमार जैन, गोरे बाबू, अशोक वैभव, प्रमोद पाटनी, दीपकराज जैन, ऋषभ शास्त्री, सुबोध जैन, प्रमोद जैन, विवेक जैन, वर्धमान जैन, सचिन जैन, अनिल जैन, प्रशम जैन, निशंक जैन, राजू पाटनी, आशीष कौशल, श्रीमती रानी जैन, आरती जैन, निर्मला जैन आदि का सराहनीय योगदान रहा।

-दीपकराज जैन

(शिविरों की धूम, पृष्ठ 1 का शेष ...)

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के कुल 32 विद्वानों ने बालकों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया।

शिविर के दौरान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाडा, पण्डित अनुरागजी शास्त्री, पण्डित विशेषजी शास्त्री एवं श्री सन्तोष जैन भगवां ने विविध नगरों में भ्रमणकर निरीक्षण किया तथा उचित मार्गदर्शन प्रदान किये।

समापन समारोह दिनांक 27 मई को सिद्धायतन परिसर द्रोणगिरि में आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ने की। इस अवसर पर श्री अनुपजी नजा ललितपुर, श्री विनोद निरखे मलकापुर, श्री टी.सी. जैन, श्री सुनील जैन एवं डॉ. रमा जैन छतरपुर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा, पण्डित रूपचन्दजी बण्डा, पण्डित केवलचन्दजी ललितपुर, पण्डित बाबूलालजी शास्त्री बड़ामलहरा आदि विद्वान उपस्थित थे। इस अवसर पर लगभग 550 शिविरार्थियों की उपस्थिति रही। पुरस्कार वितरण श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, सागर के सहयोग से किया गया।

शिविर के संयोजक पण्डित अनुराग शास्त्री भगवां, पण्डित विशेष शास्त्री बड़ामलहरा एवं सह संयोजक श्री पंकज जैन द्रोणगिरि थे।

4. हिंगोली (महा.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन हिंगोली द्वारा दिनांक 27 मई से 3 जून, 2007 तक के.बी.एम. स्कूल में बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 27 मई को पंचायत समिति सदस्य श्री सुदर्शनजी कान्हेड ने किया। झण्डारोहण श्री यज्ञकुमारजी करेवार के करकमलों से सम्पन्न हुआ। शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री फूलचन्दजी कंधी थे।

इस प्रसंग पर पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे के दोनों समय अष्टपाहुड पर प्रवचनों का लाभ मिला। पण्डित अशोकजी मांगुलकर शास्त्री द्वारा लघुजैन सिद्धान्त प्रवेशिका की तथा पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई। शिविर में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के दो प्रवचनों का लाभ भी मिला।

बालबोध पाठमाला एवं वीतराग–विज्ञान पाठमाला की शिक्षण कक्षायें पण्डित स्वतंत्र जैन खरगापुर, पण्डित राहुल जैन अलवर, पण्डित अनुज जैन जयपुर, पण्डित निपुण जैन टीकमगढ, पण्डित अभिषेक जोगी नासिक, पण्डित पंकज संघई सेनगांव तथा स्थानीय विद्वान आशीष रोकडे एवं प्रजय कान्हेड द्वारा संचालित की गयी।

रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शिविर में 300 बालक एवं 250 प्रौढ साधर्मी लाभान्वित हुये। फैडरेशन शाखा में विशेष उत्साह का संचार हुआ, जिससे फलस्वरूप उन्होंने पूरे वर्ष को छहढाला वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

इस प्रसंग पर रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट ने सम्पन्न कराये। शिविर के सभी कार्यक्रम पण्डित अमोलजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

डॉ. प्रेमसुमन जैन राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

नई दिल्ली : भारत के राष्ट्रपति महामहिम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने राजस्थान के जैनविद्या मनीषी प्रोफेसर डॉ. प्रेम सुमन जैन को पालि–प्राकृत साहित्य में निपुणता तथा शास्त्र में पाण्डित्य के लिए २१ मई, २००७ को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रमाण–पत्र एवं शॉल प्रदान कर सम्मानित किया।

ज्ञातव्य है कि प्रो. जैन ने विगत ३५ वर्षों में प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार और शिक्षण के लिए दर्जनों पुस्तकें लिखी है। अब तक आपके लगभग १५० शोधपत्र प्रकाशित हुये हैं। आप मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में प्राकृत विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रहे हैं। सैकड़ों विद्यार्थियों को आपने प्राकृत भाषा की शिक्षा दी है और लगभग २० शोध छात्रों ने आपसे पीएच डी के लिए निर्देशन प्राप्त किया है।

आपको इस उपलब्धि के लिये जैनपथ प्रदर्शक समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनायें ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

सिद्धायतन रथ का प्रवर्तन

बांसवाड़ा (राज.) : तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में दिनांक 5 फरवरी से 11 फरवरी, 2008 तक आयोजित होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार–प्रसार हेतु सिद्धायतन रथ का प्रवर्तन दिनांक 20 मई, 2007 को श्री महीपालजी ज्ञायक के करकमलों से हुआ।

बांसवाड़ा से प्रारंभ इस रथ ने पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाडा के नेतृत्व में पण्डित कमलेशजी शास्त्री बण्डा एवं श्री अरविन्दजी जैन के साथ राजस्थान के बागड, हाडौती, मेवाड अंचल के सेमारी, टोकर, उदयपुर, लाम्बाखोह, बेगू, बिजौलिया, भीण्डर, झालावाड, झालरापाटन, पिडावा, भीलवाडा, चित्तौडगढ, कानोड, कुरावड, कूण, मन्दसौर, जावरा, नीमच आदि स्थानों का भ्रमण किया।

सभी जगह पूजन, प्रवचन एवं भक्ति के कार्यक्रम आयोजित हुये।

सर्वत्र समाज द्वारा रथ का भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं समन्तभद्र शिक्षण–संस्थान के सहयोग हेतु राशियों के अनेक वचन प्राप्त हुये। **ह्न मस्तांई प्रेमचन्द जैन**

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 09

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

तीसरा प्रवचन

तीन भुवन में सार, वीतराग–विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूँ त्रियोग सम्हारिकै ।।

अभी तक हुये दो प्रवचनों में छहढाला की दो ढालों पर चर्चा हुई; जिनमें संसार में सर्वत्र दु:ख ही दु:ख है ह्न यह पहली ढाल में और उस दु:ख का कारण गृहीत और अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र हैं ह्न यह दूसरी ढाल में बताया गया है।

अब तीसरी ढाल में उन दु:खों से मुक्त होने का उपाय बताया जाता है।

उक्त कथनशैली का औचित्य सिद्ध करते हुये पण्डित टोडर–मलजी ने एक उदाहरण दिया है; उसमें कहा है कि जिसप्रकार वैद्य रोगी की नाड़ी देखकर कहता है कि तुझे पेट में दर्द होता है, नींद अच्छी नहीं आती है, रात को बुखार हो जाता है ?

वह पूछता जाता और मरीज हाँ–हाँ करता जाता।

वास्तव में तकलीफ तो रोगी को है, उसे बतानी चाहिए; किन्तु वैद्य विश्वास पैदा करने के लिये ऐसा करता है।

रोगी सोचता है कि वैद्य ने जब बिना बताये, मात्र नाड़ी देख– कर मेरी तकलीफ पहचान ली है; तब इसका इलाज भी सही होगा।

फिर वह वैद्य बड़े ही करुणाभाव से कहता है कि तुम्हें यह तकलीफ इसलिए हुई कि तुमने अनाप–शनाप खाना खाया है, मांस–मदिरा का सेवन किया है, दिन–रात भखा है, खाने–पीने का ध्यान नहीं रखा है, बदपरहेजी की है।

तब वह सोचता है कि यह वैद्य कितना जानकार है। इसने तो बिना बताये ही सबकुछ जान लिया। इसप्रकार वैद्य के प्रति विश्वास हो जाने से मरीज उसके बताये परहेज पालता है, दवा लेता है और भी जो कुछ वैद्य आदेश देता है, उसका पालन करता है।

इसीप्रकार यहाँ संसारी जीव को पहले संसार के दु:ख बताये, उन दु:खों के कारण बताये और अब उन दु:खों से बचने का उपाय बताते हैं; जिन्हें वह न केवल सुनेगा, समझेगा; अपितु उन्हें क्रियान्वित भी करेगा।

एक दिन एक मरीज एक वैद्य के पास आया और रो–रोकर कहने लगा ह्न मेरे पेट में भयंकर पीड़ा है। वैद्यजी ने उससे पूछा ह्न गुड़ खाया था ? उसने कहा ह्न नहीं खाया। वैद्यजी ने फिर पूछा ह्न नहीं खाया? उसने कहा ह्न हाँ साहब ! नहीं खाया। उन्होंने फिर पूछा ह्न नहीं खाया ? उसने फिर बताया ह्न नहीं खाया। तो नाराज होते हुए वैद्यजी बोले ह्न मेरे सामने से हट जा।

वैद्यजी ने उसे बहुत डाँटा। वह बेचारा हाथ–पैर जोड़ रहा था।

यह एक सत्य घटना है और मैं वहाँ उपस्थित था। वे वैद्यजी मेरे अभिन्न मित्र थे। अत: मैंने उनसे कहा ह्न तुम बहुत निर्दयी हो। बेचारे को इतनी तकलीफ है और तुम डाँट रहे हो।

उन्होंने कहा ह्न आप समझते नहीं तो बीच में क्यों बोलते हो। यह मेरा पुराना मरीज है। इसे पहले जो तकलीफ हुई थी, मैंने उसका इलाज किया था और इसको कह दिया था कि अब तुम जिंदगी में कभी भी तेल और गुड़ मत खाना। नहीं तो तुझे ऐसी ही भयंकर तकलीफ होगी। आज यह दुबारा आया है।

इसने गारंटी से गुड़ और तेल खाया है। बिना उसके यह तकलीफ हो ही नहीं सकती है।

तब मैंने कहा ह्न जब वह कसम खाकर मना कर रहा है कि उसने नहीं खाया, नहीं खाया, नहीं खाया; तब तो आपको विश्वास करना चाहिए।

उन्होंने कहा ह्न नहीं, मैं नहीं मान सकता। बिना बदपरहेजी के यह तकलीफ होती ही नहीं है। मुझे यह जानना बहुत जरूरी है कि इसने गुड़ खाया था या नहीं, तेल खाया था या नहीं ?

यदि यह सही बता देवें कि खाया था तो वही दवाई देनी पड़ेगी और नहीं खाया था तो दवाई बदलनी पड़ेगी। दवाई देने के पहले यह जानना बहुत जरूरी है और यह बता नहीं रहा है।

तब मैंने उस मरीज को समझाकर कहा कि तू सच बोल दे कि तूने गुड़ व तेल खाया था कि नहीं।

तब उसने हाथ जोड़कर कहा ह्न साहब ! न मैंने गुड़ खाया, न मैंने तेल खाया; मैंने तो गुलगुले खाये थे।

गुलगुले आटे में गुड़ डालकर तेल में पकाये जाते हैं।

तब वैद्यजी ने कहा ह्न अब कोई बात नहीं, यह पुड़िया ले जा, दो दिन में ठीक हो जायेगा। अब भविष्य में गुड़ नहीं, गुलगुले भी नहीं, किसी भी रूप में ये गुड़ और तेल तेरे खाने में नहीं आना चाहिए।

ऐसे ही यहाँ पर कह रहे हैं कि हमने तेरी तकलीफ बताई। यह भी बताया कि यह तुझे क्यों हुई है।

गृहीत और अगृहीत मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्र का सेवन किया है; इसलिए यह तकलीफ हुई है।

बोल तूने इनका सेवन किया है या नहीं किया है ?

नहीं ! साहब सिर कट जाये, लेकिन किसी भी कुदेवादिक के सामने मेरा माथा नहीं झुके।

भैया ! इसके बिना यह तकलीफ हो ही नहीं सकती थी। चार गति और चौरासी लाख योनियों का परिभ्रमण मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्र के सेवन के बिना हो ही नहीं सकता है।

अभी तक तो मरीज की सिर्फ जाँच हुई है।

अरे भाई ! हम जानते हैं कि तुम दु:खी हो और दु:खी क्यों हो ह्न

यह भी जानते हैं। अब तुम्हें हमारी बात पर भरोसा हो तो हम दु:ख मेटने का उपाय बताते हैं। ध्यान से सुनो।

मोक्षमार्ग माने दु:खों से छूटने का उपाय। वह उपाय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप है। वे दो प्रकार के होते हैं ह्न एक निश्चय सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र और दूसरे व्यवहार सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र। इसलिए अब तीसरी ढाल में इनकी चर्चा शुरू करते हैं।

देखो ! पहली ढाल में क्रम से चारों गतियों के दु:ख बताये; दूसरी ढाल में अगृहीत मिथ्यादर्शन, अगृहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्याचारित्र तथा गृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्याज्ञान और गृहीत मिथ्याचारित्र ह्न इनका स्वरूप समझाया।

दूसरी ढाल के अन्तिम पद्य में लिखा है ह्न

आतम–अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन।

आत्मा और अनात्मा का ज्ञान जिन्हें नहीं है, वे धर्म के नाम पर जो भी क्रिया करेंगे, वह सिर्फ शरीर को सुखाने के काम आयेगी, दु:ख को मेटने के काम नहीं आयेगी। आत्मा और अनात्मा को समझे बिना उपवास करोगे तो वजन कम हो जायेगा। आज के जमाने में तो वह भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेकिन आत्मा और अनात्मा को समझे बिना आत्मा का कल्याण हो जाये ह्न यह सम्भव नहीं है।

यहाँ प्रारम्भ ही इस बात से करते हैं कि संसार में जितने जीव हैं, वे दु:खी हैं ह्न यह बात तो सिद्ध ही है और वे दु:ख से छूटना चाहते हैं ह्न यह भी सिद्ध है; क्योंकि हमारा जरा–जरा सा प्रत्येक प्रयत्न भी दु:ख से छूटने के लिए ही होता है।

आपने अभी–अभी आसन बदल लिया, क्यों बदला ? दर्द होने लगा इसलिए बदल लिया न। समझ लो इतना–सा प्रयत्न भी आपने दु:ख दूर करने के लिए ही किया है। हम अपने पेट को खाली भी सुखी होने के लिए करते हैं और भरते भी सुखी होने के लिए हैं। कई बार भरा और कई बार खाली किया, लेकिन कभी सुखी नहीं हुये। अब यह नक्की करो कि सुख किसमें है अर्थात् आत्मा का हित किसमें है ?

तीसरी ढाल में मोक्षमार्ग के रूप में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का निश्चय और व्यवहार से निरूपण है।

निश्चय का निरूपण तो मात्र तीन लाइनों में है, उसके बाद पूरी ढाल में जो भी वर्णन है, वह सब व्यवहार का निरूपण ही है।

व्यवहार के वर्णन में जीव तत्त्व में बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा की बात की। अजीव तत्त्व में छह द्रव्यों की चर्चा की। फिर आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा ह्न इनको एक–एक, दो–दो पंक्तियों में निपटाया। और अन्त में सम्यग्दर्शन और सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की बात कहकर सम्यग्दर्शन की महिमा बताई।

तीसरी ढाल की आरंभिक पंक्तियाँ इसप्रकार हैं ह्न

आतमकोहित है सुख सो सुख, आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव मांहि न तातैं, शिव–मग लाग्यौ चहिये।।

आत्मा का हित सुख में है और वह सुख जहाँ आकुलता नहीं हो, वहाँ होता है। आकुलता का नाम है दु:ख और निराकुलता का नाम है सुख। आकुलता मोक्ष में नहीं है। इसलिए हमें मोक्ष के मार्ग में लगना चाहिये।

पण्डित बनारसीदासजी लिखते हैं ह्न

जो बिनु ग्यान क्रिया अवगाहै, जो बिनु क्रिया मोखपद चाहै।
जो बिनु मोख कहै मैं सुखिया, सो अजान मूढ़नि मैं मुखिया।।

मूर्खों के सरदार तीन प्रकार के होते हैं। एक नंबर के वे जो बिना आत्मज्ञान के मोक्ष मानते हैं। दूसरे नंबर के वे जो बिना चारित्र के मोक्ष हो जायेगा ह्न ऐसा मानते हैं। तीसरे नंबर के वे जो कहते हैं कि हम तो यहीं पर सुखी हैं, मोक्ष में जाने की क्या जरूरत है ?

जो लोग यह कहते हैं कि मोक्ष के बिना भी सुख है, माने स्वर्गों में सुख है और अमेरिका में सुख है, पैसों में सुख है; वे मूर्खों के सरदार हैं।

जिनको यह समझ में आया हो कि चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख हैं, संसार में सुख है ही नहीं, उन्हें मोक्ष के मार्ग में लगने के लिए यह बात कही जाती है।

सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चरण शिव मग सो द्विविध विचारो।

सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की एकता मोक्षमार्ग है और उस मोक्षमार्ग को समझने के लिए दो तरह से विचार करना चाहिए।

उक्त सन्दर्भ में टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''मोक्षमार्ग दो नहीं हैं, मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार का है। जहाँ सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्ग निरूपित किया जाये, वह निश्चय मोक्षमार्ग है और जो मोक्षमार्ग तो नहीं है, परन्तु मोक्षमार्ग का निमित्त है व सहचारी है, उसे उपचार से मोक्षमार्ग कहा जाये, वह व्यवहार मोक्षमार्ग है।[२]''

ये पंक्तियाँ मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार के उभयाभासी के प्रकरण में हैं।

निश्चय मोक्षमार्ग तो मात्र इतना ही है कि परद्रव्यों से भिन्न अपने आत्मा को निजरूप जानना सम्यग्ज्ञान है, उसी में अपनापन स्थापित होना सम्यग्दर्शन है और उसी में लीन हो जाना, समा जाना सम्यक्चारित्र है।

उक्त सन्दर्भ में निम्नांकित छन्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ह्न

परद्रव्यन तैं भिन्न आप में रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो सम्यक् ज्ञान कला है।।
आपरूप में लीन रहे थिर सम्यक् चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये हेतु नियत को होई।।

परद्रव्यों से भिन्न अपने आत्मा में रुचि सम्यग्दर्शन है, अपने स्वरूप को जानना ही सम्यग्ज्ञान है और अपने स्वरूप में लीन होना ही चारित्र है ह्न यह निश्चय मोक्षमार्ग है। तात्पर्य यह है कि अपने आत्मा को जानकर उसी में अपनापन कर, उसी में समा जाना वास्तविक धर्म है; शेष सब व्यवहार है। इसके बाद पूरी ढाल में व्यवहार सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र का ही वर्णन है। **(क्रमश:)**

१७ जून २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

अब प्रातः 6.20 से 6.40 बजे तक

इसकी फोटो कापियाँ कराके उचित स्थानों पर लगा दें।

मन्दिरजी में सूचना देवें और मित्रों को भी बता दें।

वैराग्य समाचार

जयपुर निवासी श्री कोमलचन्दजी गोधा का विगत माह शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी मुमुक्षु थे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित विविध गतिविधियों से आप जीवन पर्यन्त जुड़े रहे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रातः 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक निःशुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

नि:शुल्क प्राप्त करें

तत्त्वाभ्यासी परिवारों के विवाह सम्बन्धों की सरलता और परस्पर सुलभ सम्पर्क की भावना से आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन द्वारा मुमुक्षु समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों की स्मारिका '**मण्डप**' का द्वितीय अंक प्रकाशित किया गया है। अंक साधर्मी समाज को नि:शुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। प्राप्त करने के लिये 10/- के डाक टिकिट निम्न पते पर भेजें। ह्न सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर-02

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७